SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

# शिक्षण पद्धतियों की प्रभावी षिक्षण में भूमिका

ज्योति अरोड़ा, शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टौंक
डॉ. सपना वर्मा, शोध निर्देषिका, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टौंक
Mail ID – khatrijti@gmail.com

परम्परागत अर्थो में षिक्षण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सीखने वाले को निर्धारित विषयों में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये कुछ ज्ञान व कुषलतायें प्रदान की जाती है। इसी धारणा में षिक्षक व छात्र की सफलता इस तथ्य से मापी जाती है कि विषय वस्तु के बारे में षिक्षक द्वारा पूछे गये प्रष्नों का उत्तर देने की छात्रों में कितनी योग्यता है। यह विचारधारा षिक्षण को केवल ज्ञान प्रदान करने का साधन मानती है जबकि वास्तव में देखा जाये तो षिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिस पर समाज, शासन प्रणाली, दार्षनिक विचारधारा, मूल्य व संस्कृति का प्रभाव पड़ता रहता है। इसी कारण षिक्षण केवल छात्र को उत्तर देने योग्य बनाने तक ही सीमित नहीं अपितु षिक्षण सीखने के तीनों स्तरों की सफलता पर आधारित है जिसमें छात्र ज्ञान स्तर, बोद्ध स्तर तथा चिन्तन स्तर पर स्वयं को सफल साबित कर सके। इस उद्देष्य की प्राप्ति हेतु षिक्षण के परम्परागत ढांचे से आगे बढ़कर आधुनिक मांग को देखते हुये षिक्षण में नवीन विधियों व प्रविधियों के समावेष की आवष्यकता है।

षिक्षण का प्रमुख उद्देष्य छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना है। जिसके लिये समुचित अधिगम परिस्थितियों का सृजन किया जाता है, इन अधिगम परिस्थितियों के सृजन के लिये विधियों का उपयोग किया जाता है। षिक्षक षिक्षार्थी को जिस ढंग से ज्ञान प्रदान करता है उसे ही षिक्षण विधि कहते है। षिक्षण विधि शब्द का प्रयोग एक ओर तो अनेक प्रणालियों व योजनाओं के लिये किया जाता है तथा दूसरी ओर बहुत सारी प्रक्रियायें भी सम्मिलित कर ली जाती है। षिक्षण विधि में पाठ्यवस्तु की प्रकृति के अनुसार प्रस्तुतीकरण किया जाता है। सामान्यतः प्रस्तुतीकरण के तीन प्रमुख ढंग होते है इसीलिये षिक्षण पद्धतियां भी तीन प्रकार की होती है :–

1. कथन पद्धति – जैसे व्याख्यान, प्रष्न आदि
2. दृष्य पद्धति – जैसे प्रदर्षन, निरीक्षण आदि
3. कार्य पद्धति – जैसे प्रोजेक्ट, प्रयोग आदि

षिक्षण विधियों में छात्र व षिक्षक की भूमिकायें व क्रियाषीलता बदलती रहती है इसी आधार पर विधियों को विभाजित किया जा सकता है :–

iajesm Quality Of Work... Never Ended...

1. षिक्षक केन्द्रित विधियां
2. छात्र केन्द्रित विधियां
3. समूह केन्द्रित विधियां
4. षिक्षक व छात्र केन्द्रित विधियां

कुछ विधियों में षिक्षक अधिक क्रियाषील रहकर षिक्षण में केन्द्रीय भूमिका निभाता है अतः ऐसी विधियां प्रभुत्ववादी विधियां कही जाती है तथा कुछ विधियों में छात्र अधिक क्रियाषील रहता है, ऐसी विधियां प्रजातान्त्रिक विधियां कही जाती है। परन्तु षिक्षण हेतु किस विधि का चयन किया जाये, यह पाठ्यवस्तु की प्रकृति पर अधिक निर्भर करता है। कुछ प्रमुख विधियां है जिनके प्रयोग आज के परिवेष में षिक्षण में आवष्यकतानुसार कम या अधिक किया ही जाना चाहिये जैसे –

1. **निगमनात्मक व आगमनात्मक विधि –**
   जब छात्र को कोई सामान्य सिद्धान्त बताकर उसकी जांच या पुष्टि के लिये अनेक उदाहरण दिये जाते है तो वह निगमनात्मक विधि कहलाती है। दूसरी ओर जब अनेक उदाहरण देकर छात्रों से कोई सामान्य नियम निकलवाया जाता है तो उसे आगमनात्मक विधि कहते है। ये विधियां व्याकरण षिक्षण के अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी है।
2. **संष्लेषणात्मक तथा विष्लेषणात्मक –**
   पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करने का ढंग ऐसा हो कि पहले अंगों का ज्ञान देकर तब पूर्ण वस्तु का करवाया जाये तो उसे संष्लेषणात्मक विधि कहते है। जैसे पहले अक्षर ज्ञान करवाकर फिर शब्दों का ज्ञान करवाया जाये। परन्तु वहीं जब पहले पूर्णता दिखायी गयी तत्पष्चात अंगों को ज्ञान करवाया जाये तो इसे विष्लेषणात्मक विधि कहा जाता है।
3. **वस्तु विधि –**
   षिक्षण का एक सूत्र है – ' मूर्त से अमूर्त की ओर ' अर्थात ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जब ज्ञान प्राप्त किया जाता है तो सर्वप्रथम किसी वस्तु पर दृष्टि डालने पर हम उससे सामान्य रूप से परीचित हो जाते है। अतः मूर्त वस्तु ज्ञान प्रदान करने का सबसे सरल साधन है इसीलिये पाठ के आरम्भ में वस्तु विधि का सहारा लेना सर्वाधिक सुगम है जिसमें बच्चों को पढ़ाने के लिये वस्तुओं का प्रदर्षन करके उनके विषय में ज्ञान प्रदान किया जाता है।
4. **दृष्टान्त विधि –**
   वस्तु विधि का दूसरा रूप है – दृष्टान्त विधि। वस्तु विधि में जिस प्रकार वस्तुओं के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है दृष्टान्त विधि में इसी प्रकार दृष्टान्तों का। दृष्टान्त दृष्य भी हो सकते है, श्रव्य भी। इसमें चित्र, मानचित्र, चित्रपट आदि के सहारे वस्तु का स्पष्टीकरण किया जाता है। साथ ही उपमा, उदाहरण, कहानी, चुटकुले आदि के द्वारा भी विषय का स्पष्टीकरण किया जा सकता है।

SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

उपर्युक्त उल्लेखित विधियों का षिक्षक पाठ योजना में प्रयुक्त कर अपने षिक्षण को प्रभावी व सुगम्य बना सकता है। परन्तु पाठ्यवस्तु में निर्माण के साथ प्रदर्षन का अपना प्रमुख स्थान है। जितनी सतर्कता व सजकता से पाठ्यवस्तु को क्रमबद्ध व व्यवस्थित किया जाना आवष्यक है उतना ही उसे किस प्रकार छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये, यह कआवष्यक है। अतः कुछ प्रमुख विधियां षिक्षक विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष किस माध्यम से कर जाये ताकि अधिगम की स्थिति प्राप्त हो। इनमें कुछ विधियां इस प्रकार है :–

1. **व्याख्यान विधि** – यह षिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है। यह आदर्षवादी विचारधारा की देन है। इसे षिक्षण की प्रभुत्ववादी षिक्षण विधि भी मानते है क्योंकि इसमें षिक्षक अधिक क्रियाषील रहता है। छात्रों के ध्यान को केन्द्रित करने के लिये कभी–कभी षिक्षक प्रष्न प्रविधि की भी सहायता लेता है। इसमें षिक्षक को वक्ता की भूमिका में व छात्र केवल श्रोता की भूमिका का निर्वाह करते है।
2. **पाठ–प्रदर्षन विधि** – यह विधि प्रषिक्षण की परम्परागत विधि है। इसका प्रयोग तकनीकी संस्थाओं व औद्योगिक प्रषिक्षण संस्थाओं में किया जाता है। इसे अनुदेषनात्मक पाठ्यक्रम में अधिक प्रयुक्त करते है। यह भी प्रभुत्ववादी विधि मानी जाती है क्योंकि अनुदेषक जिस प्रकार पाठ का प्रदर्षन करता है, छात्र अनुकरण करने का प्रयास करते है। इसका अध्यापन, षिक्षा तथा प्रषिक्षण विभागों में अधिक प्रयोग किया जाता है।
3. **अनुवर्ग षिक्षण विधि** – इसे प्रभुत्ववादी व प्रजातंत्रवादी दोनो प्रकार की विधि मानते है। व्याख्यान विधि में छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाईयों को षिक्षक से हल कराने का अवसर नहीं मिलता है। इसीलिये कक्षा को छोटे–छोटे सजातीय कर्मो में बांट दिया जाता है। एक अनुवर्ग को एक षिक्षक को सौंप दिया जाता है। वह षिक्षक अपने अनुवर्ग की सभी अध्ययन सम्बन्धी कठिनाईयों के समाधान में सहायता करता है। इस प्रकार के षिक्षण को अनुवर्ग षिक्षण कहा जाता है।

उपर्युक्त विधियां सामान्यतः षिक्षक केन्द्रित विधियां मानी जाती है परन्तु 19 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान ने षिक्षा व षिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित किया और छात्र के विकास को प्राथमिकता देने की बात की जाने लगी। प्रकृतिवादी दर्षन ने भी छात्र की प्रकृति के अनुसार षिक्षा की व्यवस्था को महत्व दिया। अतः षिक्षण षिक्षक केन्द्रित होने के स्थान पर छात्र केन्द्रित करने पर बल दिया गया और इस हेतु कुछ विषेष विधियों का विकास हुआ।

- **कैलर योजना** – यह विधि स्वामित्व अधिगम के समान है। इसका विकास स्किनर के अधिनियमों पर आधारित है। इसमें अनुबद्ध अनुक्रिया अधिगत सिद्धान्त को महत्व दिया गया है। इसके अन्तर्गत छात्र नियन्त्रित, स्वतः अधिगम सम्बन्धी सहायक अधिनियमों को प्रयुक्त किया जाता है। किसी पाठ्यक्रम के आरम्भ में छात्र–षिक्षक के मध्य समझौता किया जाता है कि कितना कार्य करने के बाद छात्र अपनी गति से सीखना प्रारम्भ कर सकेंगे तथा वे स्वोपक्रम भी कर सकेंगे। षिक्षक अनुवर्ग षिक्षण के लिये उपलब्ध रहेगा और लद्यु समूह वाद–विवाद का आयोजन करेगा। इस प्रकार छात्रों को षिक्षक द्वारा निर्देषन तथा पृष्ठपोषण भी दिया जाता है। सामान्यतः इसका प्रयोग उच्च कक्षाओं के लिये किया जाता है।
- **पर्यटन विधि** – षिक्षक प्रक्रिया का उद्देष्य अधिगम परिस्थितियों को उत्पन्न करना है जिसमें छात्र सीखने के अनुभव प्राप्त कर सके। कक्षा–षिक्षण में छात्र अधिकांष रूप में श्रव्य इन्द्रियों से सीखने का अनुभव प्राप्त करते है। इसमें छात्र की स्मरण शक्ति व कल्पना शक्ति को अधिक कार्य करना पडता है परन्तु छात्र को यदि प्रत्यक्ष अनुभव कर ज्ञान प्रदान करवाया जाये तो वह अधिक प्रभावषाली माना जायेगा। अतः पर्यटन विधि छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का प्रभावी माध्यम प्रदान करती है। यह विधि छात्रों को नीरस कक्षा कक्षों से सरस वातावरण में सजीवता से सीखने का अवसर प्रदान करती है।
- **प्रायोजना विधि** – अमेरिका के प्रसिद्ध षिक्षा शास्त्री डयूवी, किलपैट्रिक, स्टीवेंसन आदि के सम्मिलित प्रयास का फल है प्रायोजना विधि। इनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के लिये स्वाभाविक वातावरण अधिक उपयुक्त होता है। इस विधि से पढ़ाने के लिये पहले कोई समस्या ली जाती है जो प्रायः छात्रों के द्वारा उठाई जाती है और इस समस्या का हल करने के लिये उन्हीं के द्वारा योजना बनायी जाती है और योजना को स्वाभाविक वातावरण में पूर्ण किया जाता है।
- **डॉल्टन विधि** – अमेरिका के डॉल्टन नाम स्थान में सन् 1912 से 1915 के बीच कुमारी हेलेन पार्खस्ट ने षिक्षा की एक नयी विधि प्रयुक्त की, जिसे डॉल्टन योजना कहते है। यह विधि कक्षा षिक्षण के दोषों को दूर करने के लिये आविष्कृत की गयी थी। डॉल्टन योजना में कक्षा–भवन का स्थान प्रयोगषाला ले लेती है। प्रत्येक विषय की एक प्रयोगषाला होती है जिसमें उस विषय के अध्ययन के लिये पुस्तकें, चित्र, मानचित्र तथा अन्य सामग्री के अतिरिक्त सन्दर्भग्रन्थ भी रहते है। विषय का विषेषज्ञ अध्यापक प्रयोगषाला में बैठकर छात्रों की सहायता करता है। उनके कार्यो की जांच तथा संषोधन करता है। वर्ष भर का कार्य 9 या 10 भागों में बांटकर निर्धारित कार्य के रूप में प्रत्येक छात्र को लिखित दिया जाता है। छात्र इस कार्य को अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न प्रयोगषालाओं में जाकर पूरा करता है। इस योजना में छात्रों को अपनी रूचि व सुविधा के अनुसार कार्य करने की छूट रहती है। मूल स्त्रोतों से अध्ययन करने के कारण उनमें स्वावलम्बन भी आ जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि षिक्षण विधियां अनेक हैं। सबका प्रवर्तन किसी न किसी विषेष परिस्थिति में करना ही श्रेयस्कर होता है। सामान्यतः विद्यालयी षिक्षा को बुंनियादी षिक्षा के रूप में अलंकृत किया जाता है। कहा

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

जाता है कि नींव जितनी मजबूत होगी, इमारत उतनी ही सुदृढ़ होगी, परन्तु वर्तमान समय का सामान्य अवलोकन करते है तो पाते है कि विद्यालय के प्रांगण से निकले कई प्रतिभावान बालक बड़े विष्वविद्यालयों में खो गये। एक महाविद्यालय का सामान्य सा दृष्य सभी जगह दिखाई देता है कि छात्र कक्षा में कम तथा दालानों में अधिक दिखाई देते है। त्रुटि कहाँ हो रही है कि ग्लोबल विष्वविद्यालय रेंकिंग–2024 की वार्षिक रिपोर्ट में भारत का एक भी विष्वविद्यालय टॉप विष्वविद्यालयों में सम्मिलित नहीं हो सका। स्वयं को विष्व गुरू बताने वाला देष गुणवत्तापूर्ण षिक्षा में पिछड़ रहा है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति तो आती रहती है परन्तु वह कागजों के पुलिंदा मात्र बन कर रह जाती है। कितनी भी षिक्षा नीतियां आ जायें, विधियां–प्रविधियां आ जाये – जब तक ठोस धरातल पर कार्य नहीं किया जायेगा, कक्षाओं का वातावरण छात्रों की आवष्यकतानुसार व रूचिनुसार नहीं बनाया जायेगा, मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी नहीं बनाया जायेगा, तब तक छात्र कक्षा में कम व बाहर अधिक दिखेंगे और यह परिदृष्य हमें कभी सही मायनों में विष्व गुरू नहीं बनायेगा। आज आवष्यकता है जमीनी स्तर पर नैतिकता व उत्तरदायित्व के भाव के साथ कार्य करने की। चाहे वह योजना निर्माण से क्रियान्वयन का कार्य हो या क्रियान्वयन से मूल्यांकन का कार्य हो। सभी को अपना कार्य अपने उत्तरदायित्व से जुड़कर करना होगा। इस परिस्थिति में महादेवी वर्मा जी की पंक्तियां याद आती है –

नाष भी हूँ, अनंत विकास का क्रम भी
त्याग का दिन भी, चरम आसक्ति का तम भी
तार भी, आघात भी, झंकार की गति भी
पात्र भी, मधु भी, मधुप भी, मधुर स्मृति भी
अधर भी हूँ और स्मित की चांदनी भी हूँ।

यही आज का सत्य है हम सभी भरपूर सम्भावनाओं से भरे हुये है। हम में ही सृजन व विनाष की शक्ति निहित है और यह हम पर ही निर्भर करता है कि इस षिक्षा रूपी ऊर्जा का हम विनाष करेंगे या विकास।

**संदर्भ –**

1. शर्मा, आर.ए. – षिक्षा के तकनीकी आधार 2015 पृ. 382–418
2- Elizabeth Leu & Alison Price, Quality of education and teacher learning; A review of the literature. (Available on www.ssrn.com)
3- Kothari, D.S. (1966) Chairman Report of the Education Commission (1964-66) Govt. of India, New Delhi.
4- Maheshwari A.N. ; Assessment and Accreditation in Determination an Maintenance of norms and standards for Teacher education (A Guide line)
5- Imam Ashraf ; Quality and Excellence in teacher education : Issues & Challenges in India.
6- Zenith Vol. 1 : International Journal of Shikshak Shiksha multidisciplinary Research.
7- Department of School Education and Literacy (Mhrd.gov.in)